



---

shrIshAkambharI AratI 1

श्रीशाकम्भरी आरती १

Sanskrit Document Information



---

Text title : shAkambharI AratI 1

File name : shAkambharIAratI1.itx

Category : devii, AratI, dashamahAvidyA

Location : doc\_devii

Transliterated by : NA

Proofread by : NA

Latest update : August 18, 2018

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

August 18, 2018

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीशाकम्भरी आरती १



जय शङ्करि शाकम्भरी सुतिलकवनगेहे ।  
वितरय करुणापाङ्गं निजमिह मम देहे ॥ ध्रु० ॥  
दुर्घटहटदुर्गासुरभटसंहतितोषे ।  
अत्युत्कटसङ्कटनतखेटोत्करपोषे ।  
कटितटसङ्घटपिङ्गटपटुसद्वटुवेषे ।  
कुटिलालकपटलस्फुटकटकादिकमूषे ॥ १ ॥  
लक्षाधिकरक्षोगणशिक्षाकृतदीक्षे ।  
दाक्षायणि यक्षाधिपलक्ष्मिदिक्रटाक्षे ।  
साक्षात्कृतमोक्षोदयभिक्षुकजनरक्षे ।  
रक्षां कुरु रक्षां कुरु मम पूर्णापेक्षे ॥ २ ॥  
चिन्तकजनचर्चित फलचितामणि चरणे ।  
सन्तापत्रयहरणे मत्सन्ततिशरणे ।  
दान्तश्रीमद्रामानदान्तःकरणे ।  
सन्तोषय सन्तोषय मातः सुखकरणे ॥ ३ ॥

NA

